P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

शिरो-धारा

कटि-वस्ति

योग-आसन

ध्यान

नेत्र-धारा

आयुर्वेदिक चिकित्सा

फिजियोथैरेपी

मिट्टी-चिकित्सा

एक्यूप्रेशर

COMPLETE BODY WORKSHOP

सेवाधाम चिकित्सालय

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा संचालित
57, जैन मंदिर, रिंग रोड़,
इंडियन ऑयल पेट्रोल पंम्प के पीछे,
सराय काले खाँ बस अड्डा के सामने, नई दिल्ली-110013
दूरभाष : 011-26320000, 26327911, 09999609878

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) जैन मंदिर आश्रम, सराय काले खाँ के सामने रिंग रोड़, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
फरवरी, 2010

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 10 **अंक : 02** **फरवरी, 2010**

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक मंडल :

श्रीमती निर्मला पुगलिया
श्री मनोज कुमार

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति	: 5 रुपये
वार्षिक शुल्क	: 60 रुपये
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26315530, 26821348

Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@ manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी	-	5
02. बोध कथा	-	5
03. संपादकीय	-	6
04. गुरूदेव की कलम से	-	7
05. विचार मंथन	-	10
06. गीतिका	-	12
07. सत्य-कथा	-	13
08. स्वास्थ्य	-	14
09. परामर्श	-	15
10. जीवन-वृत्त	-	16
11. चुटकुला	-	20
12. संस्कृति	-	21
13. चुटकुले	-	24
14. बालें तारे	-	25
15. समाचार दर्शन	-	27
16. झलकियां	-	28

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री धर्मपाल अंजनारानी ओसवाल, लुधियाना
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष वाणी

संकल्प्यं कल्प वृक्षेण चिन्त्यं चिन्तामणेरपि
असकंल्प्यम संचिन्त्यं फलं धर्मादवाप्यते

(नीति वाक्य)

जो फल कल्प वृक्ष से संकल्प करने से मिलता है चिन्ता मणि रत्न से चिन्तन करने से मिलता है। वह फल धर्म से बिना संकल्प और बिना चिन्तन किए मिल जाता है। धर्म की क्षमता सर्वोपरि है।

बोध-कथा

कड़वा सच

एक फकीर जी जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक सौदागर मिला, वह पांच गधों पर बड़ी-बड़ी गठरियां लादे जा रहा था। गठरियां बहुत भारी थी, जिसे गधे बड़ी मुश्किल से ढो पा रहे थे। फकीर ने सौदागर से प्रश्न किया इन गठरियों में तुमने ऐसी कौन सी चीज रखी है जिन्हें ये बेचारे गधे ढो नही पा रहे है? सौदागर ने जबाब दिया कि इंसान के इस्तेमाल की चीजे भरी हुई है। उन्हें बेचने बाजार जा रहा हूं। फकीर ने पूछा कि देखे कौन-कौन सी चीजे हैं मैं भी तो जानूं। सौदागर ने कहा कि यह पहला गधा आप देख रहे है इस पर अत्याचार की गठरी लदी है। फकीर ने कहा कि भला अत्याचार कौन खरीदेगा। सौदागर ने कहा इसके खरीददार राजा महाराजा सत्ताधारी नेता है काफी ऊंची दर पर बिक्री होती है इसकी। फकीर ने पूछा दूसरी गठरी में क्या है सौदागर ने कहा कि दूसरी गठरी अंहकार से लवालब भरी है। इसके खरीदार पंडित और विद्वान है। तीसरे गधे पर ईर्ष्या की गठरी लदी है। इसके ग्राहक वह धनवान लोग जो एक दूसरे की उन्नति सहन नही कर पाते है। इसे खरीदने के लिए लोगो का तांता लगा रहता है। फकीर ने पूछा- अच्छा चौथी गठरी में क्या है भाई? सौदागर ने कहा कि इसमें बेइमानी भरी है ओर इसके ग्राहक है वे कारोबारी जो बाजार में धोखे से की गई बिक्री से काफी फायदा उठाते है। इसलिए बाजार मे इसके भी ग्राहक तैयार खड़े है। फकीर ने पूछा अंतिम गधे पर क्या लदा है? सौदागर ने जबाब दिया, इस गधे पर छल-कपट से भरी गठरी रखी है और इसकी मांग उन औरतों में बहुत ज्यादा है जिनके पास घर में कोई काम धंधा नही है और छल कपट का सहारा लेकर दूसरो की लकीर छोटी कर अपनी लकीर बड़ी करने की कोशिश करती रहती है। वे ही इसकी खरीदार है। तभी महात्मा की नींद खुल गई। इस सपने में उनके कई प्रश्नों का उत्तर मिल गया था।

सम्पादकीय

भारत की वर्तमान छवि

प्राचीन समय के भारत का इतिहास बड़ा सुनहरा रहा है। सम्पन्नता और समृद्धि की दृष्टि से यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था। अध्यात्म और ज्ञान के क्षेत्र में यह देश सबका गुरू रहा है। ज्ञान की परिपक्वता और अनुभवों की सर्वागीणता के लिए सभी देशों के लोग यहां आते थे। कला, संस्कृति, और शालीनता यहां की विश्वविख्यात रही है। अनुसंधान कर्ताओं की राय के अनुसार यहां के खून में वे जीन रहे हैं, जो बड़ों का आदर करना और इज्जत करना सिखाते थे। आज जमाने का विपरीत असर उन पर आ गया है।

यद्यपि विज्ञान और तकनीकी में भारत ने अद्‌भुत प्रगति की है। लेकिन जीवन मूल्यों का बड़ा ह्रास हुआ है। कुछ अपवाद स्वरूप व्यक्तियों को छोड़कर कहां है किसी भी वर्ग में ईमानदारी, आचरण, की शुद्वता, कर्तव्य परायणता ऊपर से नीचे तक सभी अपना घर भरने में लगे हैं, देश की भलाई और जनता के हित की किसकों चिन्ता है?

वर्बाद गुलिंस्तां हो जाता, यदि एक ही उल्लू बैठा हो।
हर शाख पै उल्लू बैठे हैं अंजामें गुलिस्तां क्या होगा।।

यदि चमन में एक उल्लू बैठ जाता है तो चमन को बर्वाद कर देता है। फिर चमन की हर शाख पर उल्लू बैठे हों उस चमन में क्या बचेगा। आज यहां क्या राजनेता,? क्या राज्य अधिकारी, क्या राज्य कर्मचारी, क्या व्यापारी, क्या डाक्टर, क्या वकील यहां तक कि क्या न्यायाधीश और सेनापति तक अपना कर्तव्य भूलकर एक ही दौड़ में लगे हैं। जो रक्षक हैं वे ही भक्षक बनते जा रहे है। जो आतंकवादी हमारे देश की जड़ें खोखली कर रहे हैं उनके साथ मिलकर देश द्रोहियों का काम कर रहे हैं।

जब बाड़ ही फलो को खाने लगे तो फल कैसे सुरक्षित रहेगे। जब बाढ़ ही खेत को खाती हो तब फल की रक्षा कौन करे। इन सबको छोड़िए। जिन्होंने समाज सुधार, देश सुधार जन जीवन को सुधारने का ठेका ले रखा है, उन देश हितैषियों को, योगाचार्यो को धर्माधीशों को और समाज के कर्णधारों को भी देख लीजिए।

उनके जीवन में कितनी पारदर्शिता है, उनका जीवन कितना आदर्शमय है,? आज के परिदृश्य में चाहे राजनीति है, चाहे धर्मनीति, और चाहे समाजनीति है, सबका एक ही हाल है इन स्थितियों को सुधारने में समाज की जागरूकता ही कारगर ही सकती है। अर्थ की बजाए चरित्र का मूल्य आंका जाए। आराम शीलता को छोड़कर परिश्रमशीलता को प्राथमिकता दी जाए। टी.वी. रेडियो, अखबारों में चरित्र को महिमा मंडित किया जाए तो आज की स्थितियों में सुधार लाया जा सकता है।

○ **निर्मला पुगलिया**

कौन है हन्ता, कौन है हन्तव्य?

○ गुरुदेव की कलम से

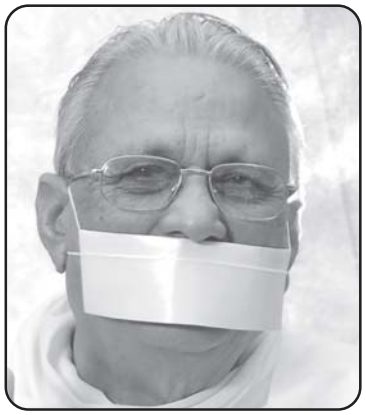

धर्म मुत्यु की सत्ता स्वीकार नही करता। वह जो मरता है, मरा हुआ ही है। यह जो जीवित है, कभी नहीं मरता। जीवन में ही मरण की प्रतीति होती है। यह प्रतीति इसलिए होती है क्योंकि जीवन सत्ता विद्यमान है, अतः वह जीवन का ही एक और अभिन्न भाग है। जीवन के पार अनूभूति होती ही नहीं। जिसे हम जीवन का अभाव कहते हैं उसकी प्रतीति भी जीवन में ही होती हे, अतः अभाव नहीं है। जिसे हम अभाव कहते हैं उसकी प्रतीति नहीं हो सकती। जिसकी प्रतीति हो सकती है वह अभाव नहीं हो सकता।

अगर जीवन एक सत्य है उसमें मृत्यु के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। अगर स्थान है तो जीवन सत्य है ही नहीं ?, उसकी अस्तित्वमत्ता और अर्थ - सत्ता है ही नहीं । तब उसके प्रति आकर्षण विकर्षण कोई रह ही नहीं जाता । अतः अहिंसा की आधारशिला मरण के अभाव पर नही रखी जा सकती तथा हिंसा की प्रतिषठापना मरण की सत्ता पर नही की जा सकती । अहिंसा मरण का नकार नहीं है, हिंसा जीवन का नकार नहीं है। अगर होते तो महावीर या बुद्व के लिए इसका कोई अर्थ नहीं रह जाता ।

<u>एक ही है जीवन सत्ता</u>

समग्र विश्व को हम जड़ चेतन दो भागों में विभाजित करते हैं, लेकिन जिसे हम जड़ जगत् कहते हैं वह हमारे ऐन्द्रिय संस्थान पर बाह्य अस्तित्व के प्रभाव की प्रतिक्रिया मात्र है जो भीतर प्रतिभासित होता है। अस्तित्व की सत्ता जिनमें अन्तनिर्हित है वह है चैतन्य, जिसका आलोक बाहर के जगत् को सत्ता और अर्थवत्ता प्रदान करता है। उसका आलोक अनन्त प्रकार के द्वारों से व्यक्त हो सकता है, लेकिन अपने आप में यह एक और अविभाज्य सत्ता है। एक कोषीय जीव अमीबा से लेकर बहुकोषीय मानव तक एक जीवन सत्ता अपने को अनन्त रूपों में साकार कर रही है। किसी भी प्राणी पर अगर हम कोई प्रहार करते हैं तो वह उस जीवन सत्ता पर ही करते हैं और चूंकि वही हम स्वयं हैं, अतः अपने पर ही करते हैं। अतः हर हंत्ता प्रकारान्तर से आत्महंत्ता ही है, परपीड़न प्रकारान्तर से आत्मपीड़न है। यद्यपि पीड़ा और मृत्यु भी ऐंन्द्रिय प्रतीति मात्र है, लेकिन जब तक हम ऐन्द्रिय

प्रतीति के माया विश्व में ही जीते हैं तब तक उसकी संवेदना के साथ हमारा आत्मभाव जुड़ा रहता है। अगर हम मृत्यु को नहीं चाहते तो किसी के लिए उसे चाहना आत्महनन की कामना के अलावा कुछ नहीं है जो हमारे ही अकाम्य है। जिस पल मृत्यु की हमारे लिए सत्ता रही ही नहीं उस पल हमारे हाथों किसी के मर जाने पर भी हमें कुछ होने वाला नहीं। क्योकि भीतर मृत्यु की सत्ता नहीं है। मारने वाले तथा मरने वाले का अस्तित्व ही नहीं है। बुद्व कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति माता पिता, गुरू और मूर्धाभिषिक्त राजा तथा पूरे जनपद को मारने पर भी पाप में लिप्त नहीं होता । क्योंकि वास्तव में मरने वाले तथा मारने वाले की सत्ता वहां है ही नही। अन्यथा किसी को न छूने पर भी हिंसा से हम सतत लिप्त रहते हैं।

<u>कौन है हन्ता, कौन है हन्तव्य</u>

मारने और बचाने के संदर्भो में हिंसा और अहिंसा की ऐकान्तिक व्याख्या नहीं हो सकती। कैवल्य प्राप्ति के पूर्व महावीर अपने सहवर्ती गोशालक को तपस्वी वैशम्पायन द्वारा प्रक्षिप्त तेजोलेश्या की प्रचण्ड ज्वाला से शीतललेश्या के प्रयोग द्वारा बचाते हैं। लेकिन तीर्थकरत्व की स्थिति में गोशालक द्वारा प्रक्षिप्त तेजोलेश्या से अपनी आंखों के आगे अपने गण के दो मुनियों के जलकर भस्म हो जाने पर भी उन्हें नही बचाते। प्रथम स्थिति में उनका जीवन और उसकी ऐन्द्रिक -प्रतीतियों के साथ तादात्म्य है। दूसरी स्थिति में वे समग्र अस्तित्व में व्याप्त देहातीत एक, अखण्ड और चिरन्तन जीवन सत्ता से तादाम्य कर चुके हैं। अब यहां मृत्यु और वेदना की सत्ता ही नहीं है, न अपने लिए न दूसरों के लिए। अतः बचाना ही हिंसा है क्योकि बचाने का अर्थ होगा हन्ता और हन्तव्य में उस एक जीवन सत्ता को बांट देना जो चेतना की गुणाश्रित एवं प्रमत्त अवस्था है- हिंसा का साकार रूप । वहां अपने गोशलक द्वारा प्रक्षिप्त तेजोलेश्या का भी प्रतिकार महावीर नहीं करते, क्योंकि मै उस बिन्दु पर स्थित है जहां मृत्यु और जीवन, सुख और दुख के द्वैत की सत्ता ही नहीं है। रह गयी है केवल शास्वत अस्तित्व की अमर चेतना। "नायं हन्ति न हन्यते" - वह न मारता है न मरता है। वे अपने लिए जैसा प्रतीत करते है, वैसा ही दूसरों के लिए भी करते है। अपने और दूसरे भी वहां हमारे अपने संदर्भ मात्र है जो भाषा और अभिव्यक्ति के साथ जुड़े है। तत्वतः वहां इस द्वैत की सत्ता ही नहीं है। एकोविअहं, बीयो वि अहं, अक्खयो वि अहं, अव्वयो हि अहं- मैं एक हूं, मैं दो हूं, मैं अक्षय हूं, मै अव्यय हूं। इस भावभूमि पर जहां ''स्व-पर" की द्वैतमयी सत्ता ही नही है, अहंमयी व्यक्तित्व चेतना का अस्तित्व ही नही है, वहां अहिंसा अपनी पूर्णता में स्वयं स्थित हे। वह परम ज्ञान की भूमिका है जहां सारे प्रतिमान बदल गए हे। उससे पूर्व की स्थिति अज्ञान की है प्रमाद की है। किन्तु वहां भी अपने और दूसरों के मध्य स्तर वैभिन्न नही है। महावीर जैसा अपने लिए प्रतीत करते है, वैसा ही दूसरे

के लिए भी कर रहे हे। भावना के स्तर पर वहां भी करूणा की ही सत्ता है, लेकिन अहंबोध से लिप्त होने के कारणवह प्रेम नही मोह बनती है, संवर नही आम्रव बन जाती है।

वीतरागता या कर्तव्य-च्युति

लेकिन संसार चेतना के स्तर पर जीते हुए अगर हम कैवल्य प्राप्त वीतराग महावीर का उदाहरण रखकर दूसरो के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख होते हैं तो वह वीतरागता की नही पाषाण हद्यता की, ज्ञान की नही संकीर्ण स्वार्थ वृत्ति की, धर्म कीनही पाप की भूमिका होती है। गगनचुम्बी अटट्ालिका में सुख साधनो के मध्य आसक्तिपूर्वक जीने वाला देह का उपासक यदि किसी गरीब को भूख तड़प-तड़प कर मरते देखकर महावीर की वीतरागता के सिद्वान्त का सहारा लेकर उसके प्रति पाषाण हृदय होकर उसकी सहायता नही करता तो वह दानवीय क्रूरता का भाव बन्ध कर रहा होता है, धर्म की साधना नही। अपने लिए सम्पूर्ण राग को अंगीकार कर दूसरों के साथ व्यवहार में वीतरागता के नाम पर हृदयहीन उपेक्षा धारण करने वाला व्यक्ति भगवान के मार्ग से प्रतिपल बहुत दूर जा रहा होता है, चाहे वह इसे स्वीकार करे या नही। अन्तर्भावना और बाहरी कर्म के मध्य जहां भी विपरीतता आती है, पाप ही निस्पन्न होता है। बचाना या मारना अपने आपमें हिंसा या अहिंसा कुछ भी नही कहे जा सकते। शरीर की किसी भी क्रिया को पाप या पुण्य से नहीं जोड़ा जा सकता।

अन्तवृर्त्तियां ही निर्णायक होती है उसका जो हमें भीतर से बांधता या मुक्त करता है। जहां भी अन्तवृर्त्तियों में अपने और दूसरों के मध्य विषमता स्थिति है, पाप की सत्ता ही पल रही होती है और जहां वह नही है, पाप की सत्ता नही हो सकती और वह यह कि पुण्य से पाप को, शुभ से अशुभ को क्षीण किया जा सकता है और अन्ततः शुभ को भी छोड़कर गुणातीत, भावातीत में प्रवेश किया जाता है।

वस्तुतः अपने और दूसरों के मध्य भावनात्मक और आचारगत विषमता ही हिंसा है, दो विपरीत स्तरों को निर्माण कर उनमें समानान्तर जीना ही हिंसा है जिसके मूल में खड़ा है हमारा अहंमूलक व्यक्तित्व-बोध। समग्र एवं सार्वभौम एक जीवन सत्ता से हमारा तादात्म्य जहां भी टूटता है, व्यक्तित्व -बोध के रूप में जहां भी हमारा "स्व" शेष सम्पूर्ण से पृथक होता है, चेतना का जहां भी अपने और दूसरे में विखण्डन होता है, हिंसा वहीं भीतर ही भीतर हो चुकती है। कर्म तो उससे जुड़कर उसकी अभिव्यक्ति माध्यम मात्र बनता है, जिसके अभाव में उसकी सत्ता मिट नही जाती । खलील जिब्रान कहता है- कितने ही ऐसे झूठे हैं जिन्होंने कभी एक भी झूठ नही बोला, कितने ऐसे हत्यारे हैं जिन्होने किसी के ऊपर शस्त्र तक नही उठाया और कितने ही ऐसे व्याभिचारी हैं जिन्होने किसी स्त्री को छुआ तक नहीं । बाहरी घटनाओं के आधार पर हिंसा अहिंसा की मान रेखा खीचना असम्भव है।

स्वार्थी संसार

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

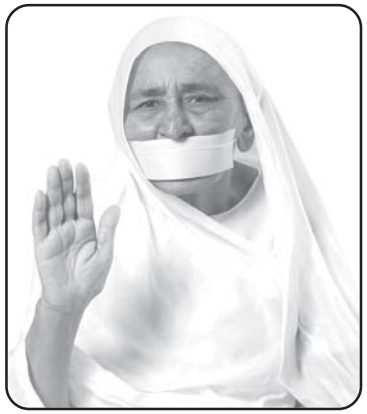

बेटा दीनानाथ ! तुम्हारे पिताजी को गुजरे दस साल हो गए हैं। मेरा भी क्या भरोसा है, कब भगवान उठा ले। क्यो न तुम भाई-भाई बंटवारा कर लो। कल को आपस में लड़ाई झगड़ा होगा तो लोग मां बाप को भला-बुरा कहेंगे। तुम लोग भी हमको गालियां दोगे। बस भाइयों में तुम बड़े हो। तुम्हें चाहिए अपने छोटे भाइयों की ठीक से व्यवस्था कर दो। मां अब तो नीलम की शादी के बाद बंटवारा होगा। अब शादी के दिन ही कितने रह गए है। नहीं भाई, शादी का खर्चा दूसरे भाई कैसे उठाएगे ? तुम्हारी लड़की की शादी भी सांझी हो जाए, उसके बाद बंटवारा करने से दूसरे भाइयों का कितना नुकसान होगा। उनकी लड़कियां छोटी है? उनकी शादी में जो लगेगा क्या तुम भी उसमें भागीदार बनोगे?

दीनानाथ ने कहा, मां! कैसी बातें करती हो? मुझे कमाते हुए बीस साल हो गए दूसरे भाई अभी पांच छः सालों से कमाने लगे हैं अगर वह सारा हिसाब मैं लगाने बैठूं तो..? इन बातों का क्या कभी हिसाब लगता है? बेटा! कुछ भी हो तुम लोग मेरे रहते रहते सारा हिसाब अलग-अलग कर लो।

अच्छा मां! हम पांच भाइयों के पांच हिस्से कर ही दे। जो आप अपनी मर्जी से दे देगी वही हमें मंजूर है।

बेटा कारखाना तो अपने चारों छोटे भाइयों को दे दो, क्योंकि ये अभी इतने होशियार नही है। कि नए सिरें से कारखाना लगा सके। तुम तो होशियार, अपना नया कारखाना लगा लोगे। इसलिए तुम कारखाने से अपना हिस्सा निकाल लो। जितनी रकम तुम्हारे हिस्से में आए उतनी ले लो।

मां! यह तो कोई बात नही बनी। मुझे मकान भी नही दिया जाए और कारखाने से मेरा हिस्सा निकाल दिया जाए। आप जितनी रकम दे रहे हो उतनी तो नीलम की शादी में लग जानी है। और कुछ बची खुची से छोटा मोटा मकान बना लूंगा तो व्यापार किससे

करूगा? कम से कम मकान या कारखाना दोनो में से एक चीज तो मिले ।

आखिर मेरे भी बाल बच्चे है। मैने तेा सारी शक्ति इसी कारखाने और मकान बनाने में लगा दी। मेरे पास कोई और व्यापार थोड़ा ही है। भाई दीनानाथ! देखो तुम्हारे पिताजी ने तुम्हे हर तरह से योग्य बना दिया। तुम्हारे दूसरे भाई इतने होशियार नही है। इस लिए यह मकान और कारखाना इन्ही लोगो को देना पड़ेगा। चाहे एक सुनो या लाख सुनों। मां ! अगर यही बात थी तो मुझे यह बात एक दो साल पहले कहती ताकि मैं भी अपने परिवार के लिए बन्दोबस्त कर लेता। आखिर आपने मुझे भी जन्म दिया है, किसी और ने नहीं। दूसरे बेटों की आपको चिन्ता है तो मेरे साथ सौतेला व्यवहार क्यों?

बेटा दीनानाथ ! कुछ भी मान ले। तुम अपना हिसाब किताब करके इन भाइयों को कारखाना और मकान सौंप दो।

जिस दीनानाथ ने बड़ी मेहनत से कारखाना लगाया था, धूप छांह मे खड़ा रहकर जिस मकान को बनवाया था, उसी को आखिर घर से निकाल दिया गया। चारो भाई मजे से कारखाना चलाने लगे और आराम से कोठी में रहने लगे। दीनानाथ ने अपने हिस्से की पूंजी से अपनी लड़की नीलम के हाथ पीले कर दिये। अब वह रहने के लिए किस तरह मकान बनवाए और किस तरह से अपना नया व्यवसाय शुरू करे? व्यापार के लिए पूंजी चाहिए वह उसके पास है नही अब करे तो क्या करे? कहे तो किससे कहे? कोई सुनने वाला भी नही था? दीनानाथ को जब किसी भी तरह व्यापार शुरू करने की उम्मीद नही रही तो छोटे भाइयों के कारखाने में नौकरी करके बच्चों का पेट पालने के लिए मजबूर हो गया। कल तक जो मालिक था आज वह नौकर बन गया। वह मन ही मन सोचता है मैंने मां बाबू जी के लिए क्या नही किया? और छोटे भाइयों के लिए क्या नहीं किया अपना खून पसीना बहाकर जिस परिवार को खड़ा किया?, उसी परिवार ने मुझे कैसा बेहाल बनाया? क्या कोई भी मां अपने बेटे के साथ ऐसा व्यवहार कर सकती है? इस स्वार्थी संसार में कोई किसी का नहीं।

जीवन क्षण भंगुर है, कामनाएं सहस्त्र। सुन्दर जीवन वही है जो औरों के काम आए- मुझे मोक्ष नहीं चाहिए, मेरी प्रार्थना है मैं हजार बार जन्म लूं और हर जन्म में प्राणी मात्र की सेवा करूं।

-स्वामी विवेकानन्द

-मुनि रूपचन्द्र

रोशनी का कोई भी मजहब नहीं
मजहबों का इसलिए मतलब नही !

पांव फैलाए अंधेरे ने तभी
आग दीपक में रही, जब जब नहीं (1)

उजाले के नाम पर इतिहास में
आदमी लूटा गया कब कब नहीं (2)

आंख वाला आ गया जब सामने
दाल अंधों की गली तब तब नहीं (3)

बहुत दीवारें खड़ी की धर्म ने
और दीवारे कि हरगिज अब नही (4)

दीप हो या लैम्प ज्योति एक है
''रूप'' चेहरे एक से तो सब नहीं (5)

मुझे अपने परिश्रम से विद्वान बनना है

○ साध्वी मंजुश्री

एक बार की बात है कि एक बालक रात्रि में दीपक के प्रकाश में तन्मयता से पढ़ रहा था । उस बच्चे के आस पास कई लोग बतिया रहे थे। कई बच्चे खेल रहे थे। लेकिन वह बालक नजर को इधर उधर घुमाए बिना पढ़ता जा रहा था। उधर से विद्या की देवी सरस्वती और धन की देवी लक्ष्मी कहीं जा रही थी। सरस्वती की नजर उस बालक पर पड़ी। सरस्वती देवी ने रूकते हुए लक्ष्मी से कहा बहिन एक बालक कितना एकाग्र चित्त होकर पढ़ रहा है। मै इसकी एकाग्रता और लगन से बहुत प्रसन्न हूं। अतः इसे कुछ दिए बिना आगे नहीं जाऊंगी। देवी ने बालक के पास आकर कहा - हे बालक ! मैं तुम पर अतिप्रसन्न हूं मांगो तुम्हे क्या मांगना है?

बालक -मां ! आप कौन है? देवी - मैं विद्या कीदेवी सरस्वती हूं तुम इतनी मेंहनत से पढ़ रहे हो। मैं तुम्हें ऐसा बरदान देती हूं कि तुम बिना मेंहनत किए ही पास हो जाओंगे। क्षमा करें माता, मुझे ऐसा वरदान नहीं चाहिए। मेरी माता ने मरते वक्त यह शिक्षा दी थी कि पुत्र बिना परिश्रम किए कुछ भी मत लेना। देवी- मैं तुम्हारी निस्पृहता से बहुत प्रसन्न हूं। मैं देवी हूं इसलिए कुछ दिए बिना नहीं जा सकती। अतः कुछ मांग लो।

बालक- माता ! मैं कुछ भी नहीं मांगना चाहता फिर भी यदि आप देने के लिए विवश हैं तो आप ऐसा करे कि मेरे दीपक का तेल समाप्त होने वाला है आप इसमें थोड़ा तेल और डाल दे ताकि मैं अपना पाठ पूरा याद कर सकूं। देवी बालक को आशीर्वाद देती हुई दीपक को तेल से पूरा भर कर अदृश्य हो गई।

चुटकुला

टीचर ने सोनू दे फादर नू स्कूल विच बुलाया। टीचर ने पूछाया : तुहाडा बेटा सिगरेट पींदा है। तुहानू पता है? तुसी ओहनू कदे पुछया नहीं। फादर ने जवाब दित्ता : हां पुछया ते है लेकिन मैंनू कदे देंदा ही नहीं।

सर्दियो में अच्छा लगता है गरम-गरम सूप

भरपूर सर्दियों के दिन है इन दिनों गरम तासीर की चीजें खाने से शरीर को गर्मी मिलती है। इन दिनों सूप पीना शरीर के लिए फायदेमंद होता है। सूप से शरीर को गर्मी और ऊर्जा मिलती है। सर्दी का मौसम हो और कम्बल में बैठे हों तब यही दिल करता है कि गरमागरम सूप पिऐ और टी.वी. पर अपनी पसंदीदा फिल्म देखे या मन चाही किताब पढ़ें। इन दिनों बाजार में कई तरह की पत्तेदार और दूसरी तरह की सब्जियां मिलती हैं। गाजर, टमाटर, चुकन्दर, शलगम, मटर आदि कुल मिलाकर सब्जियों की काफी वैरायटी होती है। इन सब्जियों से तैयार सूप पौष्टिकता से भरपूर होता है। सूप कई प्रकार का होता है। विभिन्न जड़ी बूटियों और सब्जियों से बनने वाले, सूप दालों से बनने वाले सूप ये पौष्टिकता से भरपूर होते है। इन दिनों सूप को मुख्य भोजन के रूप में लिया जा सकता है। औसतन एक बाउल सूप में 100 से 150 केलोरी होती है। अक्सर कहा जाता है कि सूप में कैलोरी कम होती है परन्तु ऐसा नही है।

सूप विभिन्न तरह की सब्जियों से बनते है टमाटर, बन्द गोभी, मटर, पालक आलू के साथ साथ किसी भी एक सब्जी का सूप तैयार किया जा सकता है। सब्जियों के अलावा विभिन्न दालों, मोटे आनाजों को पकाकर उन्हें कुचल कर भी सूप तैयार किया जाता है। विभिन्न हर्ब (जड़ी- बूटियां) से भी सूप तैयार किया जाता है इसमें लेमन ग्रास, अदरक, और लहसुन विशेष तौर पर शामिल है अदरक और लहसुन का उपयोग सब्जियों के सूप बनाने में किया जा सकता है। इसके अलावा सब्जियों और दालों पनीर, और सोयाबीन जैसी चीजों को मिलाकर भी सूप बनाया जा सकता है।

सूप को गाढ़ा करने के लिए उसमें चावल मकई का आटा और ज्वार मिलाई जाती है। एशिया के कुछ देशों में अंकुरित सोयाबीन को भी मिलाने का चलन है। सब्जियों में एंटी आक्सीडेंट भरपूर मात्रा में होते है सब्जियों से बने सूप इसी बजह से ज्यादा फायदे मंद होते है। सूप बनाने से सब्जियों के सभी पौष्टिक तत्व सुरक्षित रहते है। यही बजह है कि सब्जियों के सूप अधिक फायदेमंद होते है। पालक का सूप आयरन का भण्डार होता है। प्याज, अदरक लहसुन में विभिन्न औषधीय गुण होते है। और सर्दियों में इनका सेवन काफी फायदेमंद होता है।

-प्रस्तुति : योगगुरू अरूण तिवारी

गर्मी के फेर में कहीं मिल न जाए गम

सर्दी भगाने के लिए आप हीटर या ब्लोअर का इस्तेमाल करते हैं। तो जरा सावधान हो जाय। डाक्टरों के मुताबिक एहतियात बरते बिना इनका इस्तेमाल करना खतरनाक है ऐसे में स्किन प्राब्लम से लेकर शरीर में पानी की कमी और दम घुटने से मौत तक हो सकती है।

हीटर और ब्लोअर

हाट एयर ब्लोअर हवा गर्म करता है। इससे हवा में मौजूद नमी खत्म हो जाती है। इस वजह से इन्फेक्शन की आंशंका बढ़ जाती है। अस्थमा के मरीजों को ज्यादा दिक्कत हो सकती हैं। गर्म हवा की वजह से सांस की नलियों को नुकसान पहुंचता है। नाक गले और फेफड़ों को ठीक से काम करने के लिए नमी की जरूरत होती है। हवा सूखी होगी तो इन अंगों में पानी की कमी हो जाएगी और जख्म होने की आशंका बढ़ जाएगी। कमरों में ताजा हवा का बहाव न होने और उपर से हीटर या ब्लोअर चलने पर कमरे की हवा की क्वालिटी खराब हो जाती है। मार्केट में आ रहे नए आयल बेस्ड हीटर्स में यह प्राब्लम नहीं होती लेकिन उनका दाम ज्यादा है।

अलाव और अंगीठी

किसी भी किस्म की आग जलाकर या अंगीठी के जरिए कमरा गर्म करने की कोशिश खतरनाक है। कोयला जलने पर तमाम गैसे निकलती हे। जिनमें कार्बन मोनोआक्साइड ज्यादा खतरनाक। यह शरीर के लिए जरूरी आक्सीजन को हवा में से खत्म करती है। इसकी वजह से सांस की नलियों में सूजन आ सकती है। शरीर मे बहने वाले खून में हीमोग्लॉबिन आक्सीजन कैरी करता है, लेकिन नाक के जरिए कार्बन मोनोआक्साइड पहुंचने पर होमोग्लोबिन के साथ कार्बन मोनोआक्साइड कैरी होने लगती है। जो कि शरीर के लिए बहुत नुकसानदेह है। इसी वजह से दम घुटने से मौत भी हो सकती है।

ध्यान रखे

कमरे में हीटर या ब्लोअर जल रहा है, तो खिड़की या दरवाजे को थोड़ा सा खुला रखें। हीटर या ब्लोअर सीधे-सीधे शरीर या बिस्तर के सामने न रखें ।

कमरे में बाल्टी में पानी रखें गर्मी बढ़ने पर उस पानी से कुछ मात्रा में भाप बनेगी जिसकी वजह से हवा की नमी बरकारार रहेगी। सर्दियों में पानी पीना कतई न भूलें। पूरी रात हीटर जलता न छोड़ें।

-प्रस्तुति : ज्योति कानुगा (गरिमा)

विद्यावाचस्पति डा. पंचाक्षरी हिरेमठः व्यक्तित्व और कृतित्व

○ डॉ. चन्दूलाल दुबे
पी.एच.डी., डी.लिट

सन 1968 में दक्षिण भारत की पद यात्रा के बीच हुबली शहर में पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री तुलसी के सानिध्य में आयोजित कबि सम्मेलन की अध्यक्षता यशस्वी राज्य कवि श्री बेन्द्रे जी ने की। मध्य रात्रि तक चले इस कवि सम्मेलन में कर्नाटक के अनेक कवियों के साथ-साथ मुनि श्री रूपचन्द्र जी का भी कविता का पाठ हुआ। सम्मेलन के पश्चात मुनिवर के पास एक व्यक्ति आए और भाव प्रवण शब्दों में कहा- आपने अपनी मेरी कविताओं पर अपना नाम लिख दिया है। मुनिवर ने सहजता से कहा- उन कविताओं पर आप अपना नाम भी लिख सकते है। उस व्यक्ति का नाम है डा. पंचाक्षरी हिरेमठ। डा. हिरेमठ जी सन 1969 के बेंगलोर चातुर्मास में पूज्यवर का सुप्रसिद्व मुक्तक-संग्रह "खुले आकाश में" का कन्नड़ अनुवाद लेकर मुनिवर के पास आए और बोले- आपके निर्देश के अनुसार आपकी कविताओं पर मैने अपना नाम भी लिख दिया है। पूज्यवर तथा डा. पंचाक्षरी जी का यह अद्भुत आत्मीय मिलन तब से लेकर आज तक श्रद्वा और प्रेम गंगा जमुना की तरह अनवरत प्रवाहमान हैं। उन्हीं डॉ. पंचाक्षरी जी का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय यहां प्रस्तुत है - संपादक

कुछ में प्रथम कहलाने का श्रेय डा. पंचाक्षरी को प्राप्त है। ये प्रथम व्यक्ति है जिन्होंने कर्नाटक को पहली बार चंडीदास (बगला) लल्लेश्वरी तथा शेख नूरद्दीन (काश्मीरी) बल्लतातोल और जी शंकर कुरूप (मलयाली) मिर्जा गालिब और मोहम्मद इकबाल (उर्दू) अमृता प्रीतम तथा प्रभाज्योति कौर (पंजाबी) की रचनाओं का साहित्यिक सौदर्य के साथ परिचय कराया, अन्यथा कन्नड़ भाषी इन महान रचनाकारों के नाम मात्र से अवगत रहते। फिर ये ही प्रथम व्यक्ति है जिनके कारण कन्नड़ के पाठक उर्दू साहित्य के माधुर्य से वंचित नही रहे। मूलतः डा. पंचाक्षरी कवि है अतः उनका गद्य भी काब्य माधुरी से मंडित है।

अपार परिश्रम - प्रेमी, निस्वार्थ सेवी डा.पंचाक्षरी ने कृष्णचंदर साहिर लुधियानवी प्रेमचन्द, मुनि रूपचन्द्र, कर्तारसिह दुग्गल, अमृता प्रीतम, जयदेव, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, और आबिद सूरती, गुलाब कोठारी जैसे उर्दू हिन्दी पंजाबी बंगला और गुजराती साहित्यिकों की रचनाओं का कन्नड़ मे अनुवाद किया है। डा. पंचाक्षरी ने तुलनात्मक साहित्य की जो अब तक भारत में उपेक्षित था, बड़ी सेवा की है। डा. पंचाक्षरी की कुछ स्वरचित रचनाऐं हिन्दी उर्दू मलयालम, तमिल, तेलगू, मराठी, नेपाली, अंगेजी, स्पैनिश फ्रेंच और जर्मन भाषाओं में अनुदित है।

मुख्यतः कन्नड़ के कवि होने पर भी कभी कभी उर्दू और हिन्दी में भी लिख लेते है। दिल्ली ओर धारवाड़ के आकाशवाणी केन्द्रो ने इन भाषाओं में इनकी रचनाओं को प्रसारित किया हें साहित्यिक संसार में डा. पंचाक्षरी ने अपना स्थायी विशिंस्ट स्थान बना लिया है।

लेनिन के एक सौ तेरहवीं जन्मशताब्दी महोत्सव के अवसर पर सोवियत लैंड ने लेनिन पर एक कविता प्रदान करने हेतु आमंत्रित किया था।

केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट ने उनसे कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद कराया है और उनका प्रकाशन भी कराया है। कोरिया से प्रकाशित "एशियन लिटरेचर" (आसिया का साहित्य) में इनकी कहानी जब सूखा पत्ता चरमराता सम्मिलित है। इस पुस्तक में प्रतिनिधित्व देने के लिए लाए गए केवल पांच भारतीय लेखकों में से डा. पंचाक्षरी एक है। अतः डा. पंचाक्षरी हिरेमठ के जरिए मानों कन्नड़ को यह मान मिला है। कैम्ब्रिज (इंग्लैण्ड) से प्रकाशित "इंटर नेशनल हू इज हू" और चिकागों के "मारकिवस हू इज हू" में प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में डा.पंचाक्षरी हिरेमठ का उल्लेख हुआ है। अनेक भाषाओं के ज्ञाता डा. पंचाक्षरी ने राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों, परिषदों तथा कवि गोष्ठियों में भाग लिया है।

नामी विद्वान एवं केन्द्रीय साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डा. वी.के. गोकाक जी ने डा. पंचाक्षरी के बारे में कहा है कि "इन्होंने बंजर भूमि को फलवती बनाया है और इनके कार्य ने राष्ट्रीय एकात्मकता में चार चांद लगाए है। "

भारतीय विद्याभवन के मुख्य पत्र "नवनीत" के सम्पादक ने कहा है कि "अपनी अनूदित रचनाओं के माध्यम से डा. पंचाक्षरी ने साहित्यक एवं सांस्कृतिक सेतु निर्मित किया है।"

कन्नड़, उर्दू और हिन्दी में अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति तथा शैली के लिए डा. पंचाक्षरी

प्रख्यात है। टी.वी. तथा आकाशवाणी ने इनके भाषणों और संदर्शनों को प्रक्षेपित किया है। दूरदर्शन बेंगलूर ने आधे घंटे का इनकी जीवनउपलब्धियों पर साक्षात्कार प्रक्षेपित किया। बेंगलूर दूरदर्शन ने अलग से इनके कर्तृत्व पर डाक्यूमेंटरी तैयार की है जिसका प्रक्षेपण कई बार हो चुका। डा. पंचाक्षरी केवल कल्पना जगत के प्राणी नही है। इन्होने देश की पुकार से प्रेरित होकर हैदराबाद रियासत को भारत की सीमा में विलीनीकरण के लिए प्रारंभ किए गए क्रांन्तिकारी राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। उस वक्त क्रूर सिपाहियों से पीड़ित होने के परिणाम स्वरूप बाया पैर अब भी इसकी अमिट निशानी है।

न केवल भारतीय बल्कि विदेशी प्रमुख आध्यात्मिक व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा गौरवान्वित होने का सुअवसर डा. पंचाक्षरी को प्राप्त हुआ है।

नेपाल साहित्य समिति द्वारा नेपाल के अतिथि के रूप में 1984 में डा. पंचाक्षरी निमंत्रित थे। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति को लेकर दिए गए व्याख्यानों ने नेपाली लेखकों में काफी रूचि उत्पन्न की। रायल नेपाली अकादमी ने इनका सत्कार किया। नेपाल के अखबारों ने तो इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। डा. पंचाक्षरी ने त्रिभुवन विश्वविद्यालय की भेंट की। भगवान बुद्व की जन्मभूमि लुंबिनी राष्ट्रीय संग्रहालय, पशुपतिनाथ, मन्दिर, स्वयंभूनाथ मन्दिर, जैसे कई ऐतिहासिक एवं संदर्शनीय स्थानों के दर्शन किए ।

डा. पंचाक्षरी द्वारा प्रदत्त साहित्यिक योगदान की मान्यता के स्वरूप अमेरिका के मशहूर एरिझोनवर्ल्ड विश्वविद्यालय ने इन्हें 1985 ई. में डी.लिट की उपाधि प्रदान की।

इसी वर्ष सितम्बर में कोर्फो (ग्रीस) में सम्पन्न विश्व कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए डा. पंचाक्षरी को निमंत्रित किया गया था। उस सम्मेलन में विश्व के चालीस देशों से प्रसिद्व कवि, कलाकार, नोबल पुरस्कार विजेता समीक्षक उपस्थित थे। डा. पंचाक्षरी की कविता और उनके द्वारा पठित आलेख ने सहभागियों को आकृष्ट किया इससे वे भारतीय संस्कृति एवं विचारधारा से परिचित हुए।

डा. पंचाक्षरी किसी साहित्यिक स्कूल या पंथ से सम्बधित नही है। ये उन अल्प संख्यकों में है जो साहित्य में संकुचित दलबंदी के विरोध की वकालत करते है।

1988 नवम्बर में थाइलैण्ड में सम्पन्न विश्वकवि दसवें सम्मेलन में सहभागी होने के लिए डा.पंचाक्षरी आमंत्रित थे। इसमें दिनांक 14 से 18 तक सम्मिलित हो कर कविता का पाठ किया तथा एक आलेख भी प्रस्तुत किया।

इसके उपरान्त इंडोनेशिया, हांगकांग, मलेशिया, और सिंगापुर का दौरा किया। वहां

के साहित्यकार एव ंसाहित्यिक संस्थाओं का संदर्शन किया और वहां के कवियों से मिले। विशेषतः मलेशिया और सिगांपुर में अन्तर्राष्ट्रीय शिवानंद आश्रमों में भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के बारे में विशेष समस्याओं पर चर्चा की ।

1988 में मित्र देशद कवितेगलू (मित्र देश की कविताऐं) नामक काव्य संकलन के लिए सोवियत लैण्ड नेहरू अवार्ड नामक पुरस्कार मिला। इस बार के इस पुरस्कार की यह विशेषता रही कि यह पुरस्कार पंडित जवाहर लाला नेहरू जन्मशताब्दी के समय प्राप्त हुआ और समस्त दक्षिण भारत में केवल इसी एक मात्र संकलन का पुरस्कार के लिए चयन किया गया।

डा. पंचाक्षरी साहित्य के अतिरिक्त संगीत नृत्य चित्रकला तथा यात्रा में काफी दिलचस्पी रखते हैं। वे प्रकृति एवं मानवता के परम पुजारी हैं।

बचपन से ही स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रसेवा के वातावरण में पलने के कारण पूज्य बापू जी की आज्ञा के अनुसार आपने स्वतंत्रता - आदोलन के उपरान्त राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा के लिए अपने को समर्पित कर दिया।

जन्मजात कवि होन पर भी सामाजिक आवश्यकता को पहचान कर अनुवादकार्य को अपने हाथ में लिया। विभिन्न भाषाओं से अनुवाद करने के कार्य का अपना ध्येय बनाया। इसमें मुख्यतः हिन्दी से अनुवाद करने के लिए आपने तरजीह दी। फलस्वरूप दो सौ से अधिक कहानियां, उपन्यास, कुछ काव्य संकलन अब तक प्रकाश में आ चुके है। इसमें से प्रमुख कृतिकार हैं सुदर्शन प्रेमचंन्द, वृंदावनलाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, माखन लाल चतुवेर्दी, सियाराम शरण गुप्त, महादेवी वर्मा, डा. हरवंशराय बच्चन, जैनेन्द्र कुमार, डा. रागेय राघव, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, रंगनाथ राकेश, अनंत गोपाल शेवडे डा. प्रभाकर माचवे, मुनि रूपचन्द्र, साध्वी जतन कुमारी, पदमश्री चोपड़ा इब्राहिम शरीफ गुलाब कोठारी आदि।

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में सम्पन्न हुआ। इसमें डा. पंचाक्षरी जी आमंत्रित थे। इसी अवसर पर महीयसी महादेवी वर्मा जी की अध्यक्षता में जो कवि सम्मेलन हुआ था, उसमें आपने मातृत्व की महिमा जाग्रत कराने वाली कविता ''मां'' का कविता पाठ किया तब न केवल अध्यक्ष बल्कि दुनिया भर से पधारे श्रोतागण ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। डा. शिवमंगल सिंह सुमन ने जो कवि सम्मेलन के आयोजक थे भाव विभोर होकर डा. हिरेमठ जी को गले लगाया। मै इस घटना का प्रत्यक्षदर्शी हूं।

और एक संस्मरण सुनाने का लोभ मैं संवरण नही कर सकताा। बात 1981 की है। कर्नाटक साहित्य अकादमी की ओर से अधिकृत प्रतिनिधि के रूप में इंडियन एक्सप्रेस के एक पत्रकार ने आपका संदर्शन लिया। उस समय उन्होंने प्रश्न किया था कि क्या हिन्दी ही राष्ट्र भाषा बन सकती है? डा. हिरेमठ जी ने तुरन्त प्रंत्युतर दिया कि अब यह प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि हिन्दी राष्ट्रभाषा बन चुकी है। कन्नड़ के कवि का यह उद्गार गमनाह। है।

सन् 1987 में दिल्ली में तपस्वी डा. नगराज मुनि और क्रांन्तिकारी कवि मुनिश्री रूपचन्द्र जी के नेतृत्व में हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्व लेखक डा. प्रभाकर माचवे जी की अध्यक्षता में मूल हिन्दी पुस्तक "खुले आकाश में" के कन्नड़ रूपांतर का विमोचन हुआ। उस अवसर पर डा. हिरेमठ जी की साहित्य सेवा के लिए उनका सत्कार किया गया। दिल्ली के ऐसे सारस्वत समारोह में दक्षिण भारत के हिन्दी लेखक का सम्मान होते बहुत ही कम देखा गया है। यह बात कर्नाटक के लिए विशेष गर्व की बात है।

सितम्बर 2006 में केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने भोपाल (मध्य प्रदेश) मे इन्द्रचंद नांरग के करकमलों द्वारा एक भव्य समारोह में पुरस्कार प्रदान किया और विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि डा. हिरेमठ जी भारतीय कई विभिन्न प्रदेशों के साहित्यिकों की श्रद्वा के भाजन है। यह डा. साहब की एक विशिष्ट उपलब्धि है।

विश्वशान्ति विश्वप्रेम के लिए निरत रहने वाले डा. पंचाक्षरी जी के जीवन का मूल मंत्र है "सर्वजन सुखिनो भवंतु सर्वे संतु निरामयाः।" डा. पंचाक्षरी जी के लिए प्रेम ही परमात्मा है। आचार और विचार से इसमें विश्वास रखते हुए प्रकृति के सौदर्य की आराधना करने वाले डा. पंचाक्षरी जी जिंदगी के हर पहलू में व्याप्त कुरूपता, भ्रष्टाचार को दूर करने में जुटे हुए हैं। इसकी झलक हम उनके जीवन और साहित्य में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

चुटकुला

मुन्ना और चुन्नू लड़ रहे थे।

मुन्ना : मैं तेरे कपड़े फाड़ दुंगा।

चुन्नू : ओए! सीरियस लड़ाई में रोमांटिक बाते मत कर।

भारतीय संस्कृति में होली के विभिन्न रंग

भारतीय संस्कृति में उत्सवों और त्योहारों का आदि काल से ही महत्व रहा है। हर संस्कार को एक उत्सव का रूप देकर उसकी सामाजिक स्वीकार्यता को स्थापित करना भारतीय लोक संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। भारत में उत्सव और त्योहारों का सम्बन्ध किसी जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र से न होकर समभाव से है और हर त्योहार के पीछे एक ही भावना छिपी होती है - मानवीय गरिमा को समृद्व करना। शायद यही कारण है कि एक समय किसी धर्म विशेष के त्यौहार माने जाने वाले पर्व आज सभी धर्मों के लोग आदर के साथ हंसी खुशी मनाते हैं।

होली भारतीय समाज का एक प्रमुख त्योहर है, जिसका लोग बेसब्री के साथ इंतजार करते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में होली मनाई जाती है। रवि की फसल की कटाई के बाद बसंत पर्व में मादकता के अनुभवों के बीच मनाया जाने वाला यह पर्व उत्साह और उल्लास का परिचायक है। अबीर-गुलाल व रंगों के बीच भांग की मस्ती में फगुआ गाते हैं इस दिन क्या बूढ़े व क्या बच्चे, बस एक ही रंग में रंगें नजर आते हैं। नारद पुराण के अनुसार दैत्य राज हिरणकश्यप को यह घमण्ड था कि उससे सर्वश्रेष्ठ दुनिया में कोई नहीं, अतः लोगों को ईश्वर की पूजा करने की बजाय उसकी पूजा करनी चाहिए। पर उसका बेटा प्रहलाद जो विष्णु का भक्त था, ने हिरण्कश्यप की इच्छा के विरूद्व ईश्वर की पूजा जारी रखी। हिरणकश्यप ने प्रहलाद को प्रताड़ित करने हेतु कभी उसे ऊंचे पहाड़ों से गिरवा दिया कभी जंगली जानवरों से भरे वन में अकेला छोड़ दिया पर प्रहलाद की ईश्वरीय आस्था टस से मस न हुई और हर बार वह ईश्वर की कृपा से सुरक्षित बच निकला। अतंतः हिरणकश्यप ने अपनी बहन होलिका जिसके पास एक जादुई चुनरी थी, जिसे ओढ़कर अग्नि में न भस्म होने का वरदान प्राप्त था, की गोद में प्रहलाद को बिठा दिया ताकि प्रहलाद भस्म हो जाए। पर होनी को कुछ और ही मंजूर था, ईश्वरीय वरदान के गलत प्रयोग के चलते जादुई चुनरी ने उड़कर प्रहलाद का ढक लिया और होलिका जलकर राख हो गई और प्रहलाद एक बार फिर ईश्वरीय कृपा से सकुशल बच निकला। दुष्ट होलिका की मृत्यु से प्रसन्न नगरवासियों ने उसकी राख को उड़ा-उड़ा कर खुशी का इजहार किया। मान्यता है कि आधुनिक होलिकादहन और उसके बाद अबीर-गुलाल को उड़ाकर खेले जाने वाली होली इसी पौराणिक घटना का स्मृति प्रतीक है।

भविष्य पुराण में वर्णन आता है कि राजा रघु के राज्य के राज्य में धुधि नामक राक्षसी को भगवान शिव द्वारा वरदान प्राप्त था कि उसकी मृत्यु न ही देवताओं न ही मनुष्यों न ही हथियारों न ही सर्दी-गर्मी - बरसात से होगी। इस वरदान के बाद दुष्टताऐं बढ़ती गयीं और अंततः भगवान शिव ने ही उसे यह शाप दे दिया कि उसकी बालकों के उत्पाद से होगी। धुंधि की दुष्टताओं से परेशान राजा रघु को उनके पुरोहित ने सुझाव दिया कि फाल्गुन मास की 15वीं तिथि को जब सर्दियों के गर्मियां आरंभ होती हैं, बच्चे घरों से लकड़ियां व घास फूस इत्यादि एकत्र कर ढेर बनाऐं और इसमें आग लगाकर खूब हल्ला-गुल्ला करे। बच्चों के ऐसा करने से भगवान शिव के शाप स्वरूप राक्षसी धुंधि ने तड़प -तड़प कर दम तोड़ दिया। ऐसा माना जाता है कि होली का पंजाबी स्वरूप धुलैंडी धुंधि की मृत्यु से ही जुड़ा हुआ है। आज भी इसी याद में होलिका दहन किया जाता है और लोग अपने हर बुरे कर्म को इसमें भस्म कर देते हैं।

होली की रंगत बरसाने की लट्ठमार होली के बिना अधूरी ही कही जाएगी। कृष्ण-लीला भूमि होने के कारण फाल्गुन शुल्क नवमी को ब्रज में बरसाने की लटठमार होली का अपना अलग ही महत्व है। इस दिन नन्दगांव के कृष्ण सखा हरिहारे बरसाने में होली खेलने आते है, जहां राधा की सखियां लाठियों से उनका स्वागत करती हैं। सखागण मजबूत ढालों से अपने शरीर की रक्षा करते हैं एवं चोट लगने पर वहां पर ब्रजरज लगा देते हैं। बरसाने में होली के दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ल दशमी को सायंकाल ऐसी ही लटठमार नन्दगांव में खेली जाती है। अन्तर मात्र इतना है इसमें नन्दगांव की नारियां बरसाने के पुरूषों का लाठियों से सत्कार करती हैं। इसी प्रकार बनारस की होली का भी अपना अलग अंदाज है। बनारस को भगवान शिव की नगरी कहा गया है। यहां होली को रंगभरी एकादशी के रूप में मनाते हैं और बाबा विश्वनाथ क विशिष्टि श्रंगार के बीच भक्त बूटी का आनन्द लेते हैं।

होली को लेकर देश के विभिन्न अंचलों में तमाम मान्यताऐं हैं और शायद यही विविधता में एकता की भारतीय संस्कृति का परिचायक भी है। उत्तर पूर्व भारत में होलिकादहन को भगवान कृष्ण द्वारा राक्षसी पूतना के वध दिवस से जोड़कर पूतना दहन के रूप में मनाया जाता है तो दक्षिण में मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने कामदेव को तीसरा नेत्र खोल कर भस्म कर दिया था और उनकी राख को अपने शरीर में मल कर नृत्य किया था। तत्पश्चात कामदेव की पत्नी रति के दुख से द्रवित होकर भगवान शिव ने कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया, जिससे प्रसन्न हो देवताओं ने रंगों की वर्षा की। इसी

कारण होली की पूर्व संध्या पर दक्षिण भारत में अग्नि प्रज्वलित कर उसमें गन्ना, आम की बौर और चन्दन डाला जाता है। यहां गन्ना कामदेव के धनुष, आम की बौर कामदेव के बाण, प्रज्वलित अग्नि शिव द्वारा कामदेव का दहन एवं चन्दन की आहुति कामदेव को आग से हुई जलन हेतु शांत करने का प्रतीक है। मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में अवस्थित धूधडका गांव में होली तो बिना रंगों के खेली जाती है और होलिकादहन के दूसरे दिन ग्रामवासी अमल कंसूबा (अफीम का पानी) को प्रसाद के रूप मे ग्रहण करते हैं और सभी ग्रामीण मिलकर उन घरों में जाते हैं जहां बीते वर्ष मे परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो चुकी होती है। उस परिवार का सांत्वना देने के साथ होली की खुशी में शामिल किया जाता है।

कानपुर में होली का अपना अलग ही इतिहास है। यहां अवस्थित जाजमऊ और उससे लगे बारह गांव में पांच दिनबाद होली खेली जाती है। बताया जाता है कि कुतुबद्दीन ऐबक की हुकूमत के दौरान ईरान के शहर जंजान के शहर काजी सिराजुददीन के शिष्यों के जाजमऊ पहुंचने पर तत्कालीन राजा ने उन्हें जाजमऊ छोड़ने का हुक्म दिया तो दोनों पक्षों में जंग आरंभ हो गई । इसी जंग के बीच राजा जाज का किला पलट गया और किले के लोग मारे गऐ । संयोग से उस दिन होली थी पर इस दुखद घटना के चलते नगरवासियों ने निर्णय लिया कि वे पांचवे दिन होली खेलेंगें, तभी से यहां होली के पांचवे दिन पंचमी का मेला लगता है। इसी प्रकार वर्ष 1923 के दौरान होली मेले के आयोजन को लेकर कानुपर के हटिया के चन्द बुद्धिजीवियों व्यापारियों और साहित्यकारों (गुलाब सेठ जागेश्वर त्रिवेदी, पं. मुंशीराम शर्मा "सोम" रघुबर दयाल, बाल कृष्ण शर्मा "नवीन" श्याम लाल गुप्त पार्षद बुद्धूला मेहरोत्रा और हामिद खां) की एक बैठक हो रही थी। तभी पुलिस ने इन आठों लोगों को हुकूमत के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में गिरफ्तार करके सरसैया घाट स्थित जिला कारागार में बन्द कर दिया। इनकी गिरफ्तारी का कानपुर की जनता ने भरपूर विरोध किया। आठ दिनों के पश्चात् जब उन्हें रिहा किया गया तो उस समय अनुराधा नक्षत्र लगाय हुआ था। जैसे ही इनके रिहा होने की खबर लोगों तक पहुंची लोग कारागार के फाटक पर पहुंच गए। उस दिन वहीं पर मारे खुशी के पवित्र गंगा जल में स्नान करके अबीर-गुलाल और रंगों की होली खेली। देखते ही देखते गंगा तट पर मेला सा लग गया तभी से यह परम्परा है कि होली से अनुराधा नक्षत्र तक कानपुर में होली की मस्ती छायी रहती है और आठवें दिन प्रतिवर्ष गंगा तट पर गंगा मेले का आयोजन किया जाता है।

पग-पग पर बदले बोली पग-पग पर बदले भेष वाले भारतवर्ष में होली का त्योहार धूमधाम से विभिन्न रंगो में मनाया जाता है। भारतीय उत्सवों को लोकरस और लोकानंद का मेल कहा गया है। भूमण्डलीय और उपभोक्तावाद के बढ़ते दायरों के बीच रस और आनन्द में डूबा भारतीय जन मानस आज भी न तो बड़े-बड़े माल और क्लबों में मनने वाले फेस्ट से चहाकर भरता है और न ही किसी कम्पनी के सेल आफर को लेकर आन्तरिक उल्लास भरता है। होली पर्व के पीछे तमाम धार्मिक मान्यताऐं मिथक परम्पराऐं और ऐतिहासिक घटनाऐं छुपी हुई हैं पर अन्ततः इस पर्व का उद्देश्य मानव-कल्याण ही है। लोकसंगीत, नृत्य नाट्य, लोककथाओं, किस्से-कहानियों यहां तक मुहावरों में भी होली के पीछे छिपे संस्कारों, मान्यताओं व दिलचस्प पहलुओं की झलक मिलती है। नए वस्त्र नया श्रंगार और लजीज पकवानों के बीच होली पर्व मनाने का एक मनोवैज्ञानिक कारण भी गिनाया जाता है कि यह पर्व के बहाने समाज एवं व्यक्तियों के अन्दर से कुप्रवृत्तियों एवं गंदगी को बाहर निकालने का माध्यम है। होली पर खेले गए रंग गन्दगी के नही बल्कि इस विचार के प्रतीक है कि इन रंगों के धुलने के साथ-साथ व्यक्ति अपने राग द्वेष भी धुल दें। यही कारण है कि रंगों को धुलने के बाद लोग मस्ती में फगुआ गाते हैं और एक दूसरे का अबीर-गुलाल लगाकर भाईचारे का प्रदर्शन करते है। वर्तमान परिवेश में जरूरत कि इस पवित्र त्योहार पर आडम्बरता की बजाय इसके पीछे छुपे हुए संस्कारों और जीवन मूल्यों को अहमियत ही जाए तभी व्यक्ति परिवार समाज और राष्ट्र सभी का कल्याण सम्भव होगा ।

-कृष्ण कुमार यादव, कानपुर

चुटकुले

सोनू : रावण की लंका को सोने की लंका क्यों कहते हैं?
मोनू : क्योंकि लंका में कुंभकरण हमेशा सोता रहता है।

संता : ट्रेन की पटरी पर सो गया। एक आदमी बोला, ट्रेन आएगी तो मर जाएगा।
संता : अभी इतना बड़ा प्लेन ऊपर से गया तो कुछ नहीं हुआ। ट्रेन क्या करेगी।

मासिक राशि भविष्यफल-फरवरी 2010

○ डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वाद्व आमदनी कम और खर्चा अधिक वाला है। उत्तरार्द्व सामान्य रहेगा। कुछ जातकों के व्यवसाय में परिवर्तन सम्भावित है। परिवार में कोई विवाद संभव है। कुछ हद तक मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। क्रोध से बचें संतान की ओर से शुभ सूचना मिल सकती है।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों व विघ्नों के चलते अच्छी आमदनी के योग बनाता है। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहेगी। कुछ जातकों के लिए रूके हुए काम चल निकलेगें। शत्रु सिर उठाऐगें लेकिन उनकी चालें कामयाब नहीं होगी। कुछ जातकों की पदोन्नति हो सकती है। घर में मांगलिक कार्य हो सकता है।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि अवरोधों के चलते अल्प लाभ दे जाएगा। परिश्रम अवश्य अधिक कराएगा । गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचाने की चेष्ठा करेगें। उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। क्रोध पर काबू रखें उन्नति के अवसर मिलेंगे। समय का सद्पयोग करें। परिवारीजन मदद के लिए आगे आऐंगे।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम साध य अल्पआय दिलाने वाला कहा जाएगा। मित्र वर्ग सहायता करेगा। भाई बन्धु की सहायता के लिए तत्पर रहेगे। परन्तु परिवार में आपसी मदभेद उजागर होंगे। पुराने विवादों के भेद खुलेंगें छोटी बड़ी यात्राऐं होंगी। अपने बुजुर्गों और जीवन साथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उलझनों के निवारण के पश्चात आर्थिक लाभ वाला कहा जाएगा । किसी नई योजना पर कार्य सम्भावित है। नए लोंगो से मुलाकात होगी जिनसे सहायता मिलेगी। कुछ जातक परिवार के साथ यात्रा पर जाऐंगे वाहन सावधानी से चलाऐं वर्ना कोई दुर्घटना हो सकती है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से परिश्रम और उत्साह के कारण लाभ दे जाएगा । साथ ही खर्चा आधिक होगा । कुछ जातकों के लिए पुराने रूके हुए कार्यो में प्रगति आएगी। साझेदारी वाले जातक सोच समझ कर निर्णय लें। छोटी बड़ी यात्राऐं होगी। नए वाहन क्रय विक्रय कर सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते अल्पलाभ कराने वाला है। मित्र सहायता करेगें। कुछ जातकों को भूमि भवन क्रय विक्रय का योग है। कुछ के लिए कार्य परिवर्तन अथवा स्थान परिवर्तन सम्भावित है। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। परिवार में को कोई धार्मिक अनुष्ठान या मांगलिक कार्य संभव है।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम साध्य आमदनी कराने वाला है। शत्रु पक्ष कार्य में रूकावट डालने की कोशिश करेगे परन्तु ये जातक उन रूकावटों की पार कर लेगे । मनोबल बढ़ा रहेगा । और चित्त प्रसन्न रहेगा खर्चा अधिक रहेगा। भाई बन्धुओं से बनाकर रखना ही श्रेयस्कर है।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ वाला कहा जाएगा। अनावश्यक खर्चे तो होंगे किन्तु लाभ को देखते हुए मन प्रसन्न रहेगा । किसी अनावश्यक तर्क-वितर्क एवं क्रोध को टालें। मित्र वर्ग सहायता के लिए आगे आएगा। नए लोगों के सम्पर्क काम आएगे। विदेश क सम्पर्क भी काम आएगे।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ की स्थिति को लेकर आएगा। कुछ जातको के लिए भूमि भवन के लेने देने में लाभ हो सकता है। कोर्ट कचहरी के कार्यो में कुछ जाताकों को आशा के अनुरूप फैसला हो सकता है। परिवार में कफी कटुता एवं मधुरता देखने को मिलेगी। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह निर्वाह योग धन प्राप्ति करा ही देगा । किसी नई योजना का क्रियान्वन भी हो सकता है। शत्रु सक्रिय होगे। किन्तु मित्र लाभ लेकर समस्या का हल निकालेगें। क्रोध पर काबू रखे समस्या के समाधान निकल आएगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अनुकूल फल देने वाला नही है। धन प्राप्ति में कई प्रकार के अवरोध आएगे फिर भी कोई मनोकूल कार्य होने से आंशिक खुशी होगी। परिवार में कोई झंझट होने से मानसिक अशांति होगी। किसी मांगलिक कार्य में सम्मिलत हो सकते है। विदेश यात्रा का योग भी है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

-इति शुभम्

पूज्य गुरूदेव की दक्षिण भारत की धर्म-तीर्थ-यात्रा

पूज्य आचार्यश्री तुलसी गाणि की दक्षिण भारत की पद-यात्रा (1967-1970) बहुत ही प्रभावपूर्ण तथा प्रभावनापूर्ण रही थी। उस यात्रा में आचार्य रूपचन्द्र जी एक युवा मुनि के रूप में पूज्य गुरूदेव के साथ में थे। उस यात्रा के कड़वे-मीठे अनुभवों की चर्चा पूज्यवर आज भी जब-तब करते हैं, तो जैसे अतीत और वर्तमान कालातीत हो जाते हैं। आपके अपने ही शब्दों में- उस यात्रा में दक्षिण भारत का आध्यात्मिक तथा भौतिक वैभव जो देखने को मिला, वह कल्पना से परे था। उसके साथ ही प्रकृति ने भी खुले हाथों उस धरती को आशीर्वाद दिया है। संत तिरुवल्लुवर से लेकर आदिशंकराचार्य, उसके पश्चात वर्तमान युग में योगिराज अरविन्द, महर्षि रमण का आध्यात्मिक अवदान अविस्मरणीय है, तो गोमटेश्वर भगवान बाहुबलि, धर्म-स्थली, मूडबिद्री जैसे तीर्थ-स्थल जैन परंपरा के स्वार्णिम अतीत के जीवंत साक्षी है। कन्याकुमारी, रामेश्वरम्, मदुरै, तिरूपति बालाजी, श्रवणबेल गोला आदि ऐसे अनेक स्थल हैं जो प्रकृति, संस्कृति और भारत की आध्यात्मिक विरासत के मिलन-बिन्दु हैं। सौभाग्यवश मुगलों की वक्र दृष्टि और अंग्रजों की अपसंस्कृति के प्रभाव से दक्षिण वासी काफी कुछ बचे हुए हैं। पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री तुलसी जी के साथ मेरी तथा साध्वी मंजुलाश्री जी की दक्षिण भारत की पद-यात्रा विशिष्ट अनुभूतियों और उपलब्धियों को संजोए हुए हैं। उसके लिए हम पूज्य गुरूदेव के बहुत आभारी हैं।

उस दक्षिण भारत की यात्रा का प्रसंग फिर बनेगा, इसकी कल्पना भी नहीं थी। किंतु दिसम्बर, 2009 में तिरूमला तिरूपति बालाजी तथा गोमटेश्वर भगवान बाहुबलि का आशीर्वाद भरा आमंत्रण इतना प्रबल था कि देखते-ही देखते जनवरी 2010 के पहले सप्ताह में ही यह धर्म-तीर्थ-यात्रा सुनिश्चित हो गई। और पांच जनवरी को हमने जैन मंदिर आश्रम, नई दिल्ली से दक्षिण भारत की यात्रा के लिए ससंघ प्रस्थान कर दिया। संघ में अन्य थे- सौरभ मुनि, साध्वी समताश्रीजी, साध्वी वसुमती, साध्वी पदमश्री, गुरूकुल के बच्चे- नमन, गौरव, शुभम, सुपारस, अशोक, ऋषि एवं मुक्ति। स्टाफ के सदस्य थे अरूण तिवारी, दिलीप तिवारी, सुनन्दा बहिन तथा एल्टिन (कर्किस्तान)। पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी स्वास्थ्य तथा आश्रम- व्यवस्था की दृष्टि से दिल्ली में ही बिराजमान रहे। साध्वी कनकलता जी तथा साध्वी सुभद्राजी (बाई महाराज) आपके साथ दिल्ली में ही रहे। सरलमना साध्वी मंजुश्रीजी, साध्वी चांदकुमारी जी तथा साध्वी दीपांजी हिसार मानव मंदिर में प्रवास कर रहे हैं। वृद्धावस्था देखते हुए आपका भी यात्रा में साथ होना संभव नहीं था।

पूज्यवर की यह तीर्थ-यात्रा श्री पार्श्व सुशील धाम, बेंगलुरू से शुरू हुई। सर्वप्रथम गोमटेश्वर भगवान बाहुबलि, फिर कृष्णागिरि में निर्मीयमाण श्री पार्श्व पद्मावती तीर्थ, मदुरै में विख्यात श्री मीनाक्षी सुन्दरेश्वर मंदिर, कन्याकुमारी में पार्वतीजी का कन्याकुमारी मंदिर, विवेकानन्द शिला स्मारक, श्री रामेश्वरम् का विशाल ज्योतिलिंग मंन्दिर, भगवान राम का

धनुष-कोटि सेतुबन्ध, वेल्लोर का श्री महालक्ष्मीजी का स्वर्ण मंदिर, तिरूमला तिरूपति बालाजी का विश्व-विख्यात समृद्धि-शिखर मंन्दिर तथा काल-सर्प दोष-हर्ता कालाहस्तीश्वर देवस्थानम्, श्री तिरूपति पार्श्वनाथ मंदिर आदि तीर्थ-दर्शन, आराधना के पश्चात् पूज्य गुरूदेव नायडुपेट, नेल्लोर संघ सहित 14 जनवरी को पधार गए। पौराणिक तथा ऐतिहासिक समृद्ध विरासत लिए ये तीर्थ अपनी महिमामयी प्रभावना के लिए जगत-प्रसिद्ध है। तिरूपति बालाजी श्री मीनाक्षी मंदिर, मदुरै जैसे देवस्थान जहां अपार भीड़ लिए हैं, वहां लगभग अन्य सभी मंदिरों में दर्शनों के लिए मीलों लम्बी लाइन में से गुजरकर ही दर्शन हो पाते हैं। किंतु पूज्य गुरूदेव के व्यापक प्रभाव के कारण सभी तीर्थ-क्षेत्रों में आपको ससंघ वी.आई.पी. दर्शन/आराधना का अवसर मिला। मदुरै-प्रवास में धुन के धनी श्री ओमजी कोठारी, श्री नैणमल जी कोठारी, श्री अशोक जी जीरावला आदि की विशिष्ट सेवायें रहीं। कन्याकुमारी में विवेकानन्द केन्द्र के प्रमुख श्री वासुदेव जी तथा जगत मामाजी की सेवाओं ने यात्रा को सुगम बना दिया। रामेश्वरम् में अग्रसेन भवन का विशेष सहयोग रहा। तिरूचिरापल्ली में स्थानकवासी श्रावक संघ ने पूरा सहयोग दिया। वैसे इस पूरी यात्रा की संयोजना तथा व्यवस्था में श्री दीपक गरिमा कानूगा की श्रद्धा समर्पित सराहनीय सेवाएं रहीं। उल्लेखनीय है सौरभ मुनि की बहन तथा मानव मंदिर गुरूकुल की छात्रा गरिमा की शादी नायडुपेट के कानूगा परिवार में ही हुई है। बेंगलुरू में पूज्यवर के अनुज श्री माणकचन्द जी के सुपुत्र अभिनन्दन सोनू सिंघी तथा श्री सुभाष जी तिवारी परिवार की प्रशंसनीय सेवाएं रहीं।

15 जनवरी को प्रातः गाजे-बाजे के साथ जुलूस बाजार में से गुजरते हुए पूज्य गुरूदेव श्री श्रेयांसनाथ प्रभु के मंदिर में पधारे। वहां अपने प्रवचन में समाज को संबोधित करते हुए आपने कहा-जैसे पत्थर को तरास कर मूर्तिकार प्रभु-प्रतिमा को प्रकट करता है, वैसे ही अपने आपको तरासकर आप अपने भीतर बिराजमान परमात्मा को प्रकट करें। इस अवसर पर साध्वी समताश्री जी ने भी अपने विचार रखे। सौरभमुनि का भजन तथा गुरूकुल के बच्चों ने योगासन दिखलाए। नायडुपेट जैन समाज के प्रमुख श्री कुशालचन्द्रजी, श्री रिखबचन्द्रजी, श्री मुकेशचन्द्रजी, कृष्णचन्द्रजी, श्री दीपकजी आदि ने अधिक समय लेकर प्रति वर्ष नायडूपेट पधारने की प्रार्थना की। 17 जनवरी को सायं पूज्यवर वापस दिल्ली पधार गए। इस अवसरपर पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी के मार्ग-दर्शन में आश्रम-परिवार ने इन शब्दों में अपने हृदय की भावना प्रकट की-

महायात्रा संघ के अधिनायक महायात्री शत-शत वंदन
रचा नया इतिहास अनूठा भर दी सबमें नव पलकन
गए समुद्रों पार अनेकों बार, धर्म-ध्वज फहराए
सागर-तट पर राम-सेतु की यात्रा सबके मन भाए।

पूज्यवर की इस तेरह-दिवसीय धर्म-तीर्थ-यात्रा से अध्यात्म-जगत में एकता और प्रेम के नए वातायन खुलेंगे, ऐसा विश्वास है।

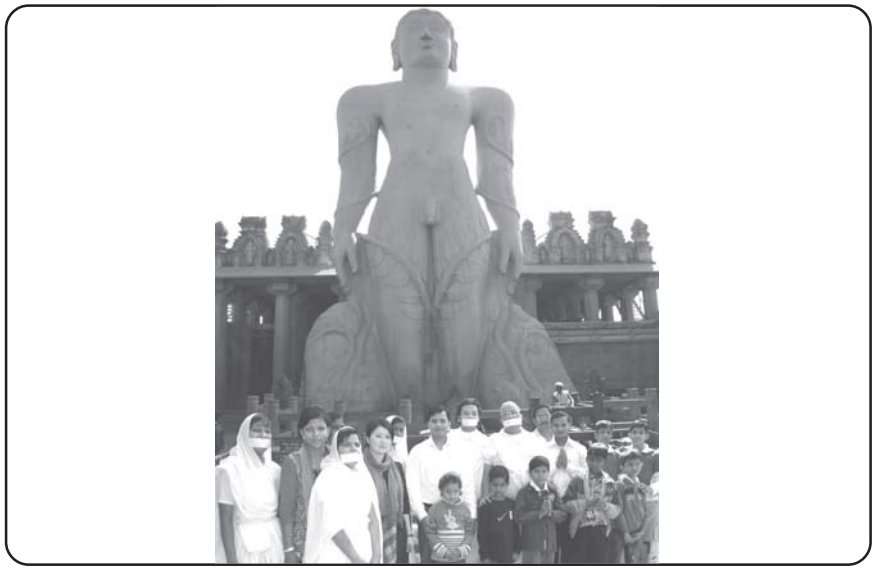

- गोमटेश्वर बाहुबलि की 57 फीट ऊंची विशालकाय प्रतिमा के चरणों में पूज्य गुरूदेव, साधु-साध्वी समुदाय, गुरूकुल के बच्चे तथा यात्री गण।

-अपने गुरूदेव आचार्य सुशील सागर सूरीजी के मनो-भावों के अनुरूप श्री जी.सी. सुराणा द्वारा निर्मित भगवान पार्श्वनाथ मंदिर, बेंगलोर, सुशील धाम में पूरे यात्रा-संघ के साथ पूज्य गुरूदेव।

-मदुरै का सुप्रसिद्ध श्री मीनाक्षी मंदिर परिसर में पूज्य गुरूदेव अपने यात्रा-संघ के साथ।

-पूज्यवर मदुरै-जैन समाज के वरिष्ठ श्रावक श्री ओमजी कोठारी, श्री नैणमल कोठारी के साथ श्री मीनाक्षी मंदिर में प्रवेश करते हुए।

-श्री विवेकानंद शिला स्मारक, कन्याकुमारी के समक्ष अपने धर्म-परिवार के साथ पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी।

-श्री दीपक गरिमा कानूगा के आवास पर पूज्य गुरूदेव के साथ धर्म-परिवार मंत्र-नाद करते हुए।

-श्री रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग तीर्थ के समक्ष पूज्य गुरूदेव अपने यात्रा-संघ के साथ।

-धनुष-कोटि राम-सेतु बंध के समुद्री किनारे पूज्य गुरूदेव, सौरभ मुनि, अरूण तिवारी, दिलीप तिवारी, साध्वी समताश्रीजी, साध्वी वसुमती, साध्वी पदमश्री, श्रीमती गरिमा, सुनन्दा बहिन, ऐल्टिन तथा गुरूकुल के बच्चे।

-नायडुपेठ- भगवानश्री श्रेयांसनाथ मंदिर परिसर में प्रवचन करते हुए पूज्य गुरूदेव।

-नायडुपेठ, नेल्लोर के बाजार से जुलूस के साथ ससंघ गुजरते हुए पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी।

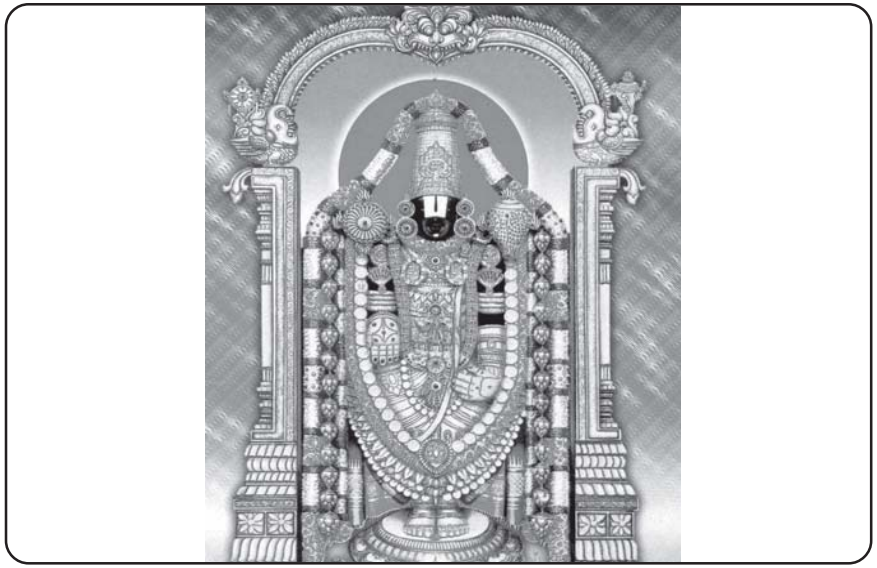

-आपार श्रद्धा के केन्द्र तिरूमला तिरूपति बालाजी का यशस्वी विग्रह, जहां रोज करोड़ों का चढ़ावा चढ़ता है।

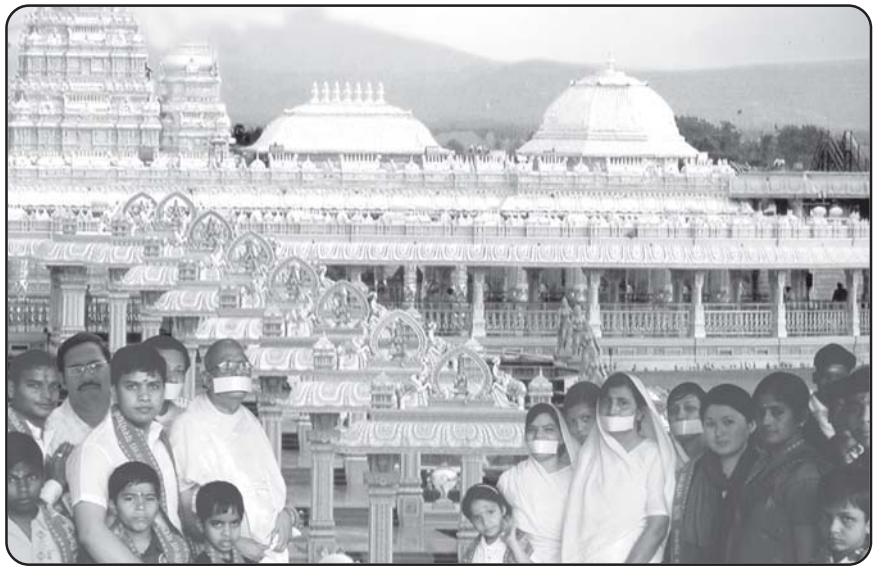

-श्री महालक्ष्मी स्वर्ण मंदिर, बैल्लोर में पूज्य गुरूदेव यात्रा-संघ के साथ।